>

Title : Increasing incidents of fire in hill areas of the country.

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार का ध्यान उत्तराखंड के जंगलों की तरफ आकृष्ट करना चाहता हूं, जहां भीषण आग लगी हुई है। आज पौड़ी, चमोली, रूद्रप्रयाग, देवप्रयाग और रामनगर के जंगल जल रहे हैं और इन जंगलों से भीषण प्रदूषण उत्पन्न हो गया है। जंगली जानवर बेतहाशा भाग रहे हैं। वे या तो आग में झुलस जाते हैं या वे गांव एवं शहरों की तरफ भाग रहे हैं। ऐसी स्थिति में उत्तरखंड की स्थिति बड़ी विकट हो गई है। अभी हाल ही में सन् 2010 में कुम्भ हुआ था, वहां पर भी हरिद्वार के चारों तरफ भीषण आग लगी हुई थी, जिसके कारण कुम्भ में स्नान करने वाले यात्रियों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा।

अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि गढ़वाली में कहावत है कि कख रह गई नीति, कख रह गई माणा और श्याम सिंह पटवारी ने कख-कख जाना। इसका अर्थ यह है कि कहां नीति रह गई, कहां माणा रह गया और श्याम सिंह पटवारी कहां-कहां जाएगा, अर्थात् उत्तराखंड बड़े विस्तार में फैला हुआ है और यहां बहुत ज्यादा जंगल हैं। आज ये जंगल धू-धू करके जल रहे हैं। पिछले साल गंगावाणस्यू में आग लगी, लोगों को बहुत कम मुआवजा मिला। गांव वालों के पास आग से लड़ने के लिए कोई सामग्री एवं उपकरण नहीं है। जिस प्रकार से मंत्री जी को मालूम है कि विदेशों में आग बुझाने के लिए हवाईजहाजों का उपयोग किया जाता है, यहां तक कि बमों का उपयोग किया जाता है, जिससे आग बुझ जाए।

अध्यक्ष महोदया, मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि वह राज्य सरकार से मिलकर एक ऐसी नीति बनाए और इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित करे, जिससे उत्तराखंड के जंगलों में लगी अग्नि शान्त हो सके और लोगों को वहां सामान्य जनजीवन बिताने और रहने का मौका मिल सके। आग से वहां पानी की समस्या भी पैदा हो गई है। आग के कारण पानी के स्रोत सूख गए हैं। वहां टैंकरों और खच्चरों से पानी भिजवाना पड़ेगा।

महोदया, आपने मुझे उत्तराखंड की वेदना दर्शाने और बताने का मौका दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।